उपसंहार

उ प सं हा र

मेरे लघु-शोध-प्रबंध का विषय है, महाकवि भूषण कृत ` शिवा-बावनी ` में अभिव्यक्त छ.शिवाजी का चरित्र। इस लघु-शोध प्रबंध के पहले अध्याय में मैंने कवि भूषण की जीवनी का वर्णन किया है। इस विषय पर लिखते वक्त कवि भूषण की जीवनी लिखना अनिवार्य नहीं लगता, फिर भी मैं ने भूषण के अन्य उपलब्ध ग्रंथों के सहारे उनकी जीवनी लिखने का प्रयास किया है।

कवि भूषण को रीतिकाल में वीरकाव्य का जनक माना जाता है। उन्होंने रीतिकालीन शृंगार भावना की अपेक्षा वीरकाव्य का सृजन महत्वपूर्ण माना। वे स्वयं प्रतिष्ठित वीर थे, इसलिए उन्होंने वीर शिवाजी का चरित्र-चित्रण किया है। रीतिकालीन वीर कवियों में भूषण का स्थान सर्वोच्च है। वे छ.शिवाजी के दरबार में ` कवि-कुल - सचिव ` पद पर थे। भूषण में स्पष्टवादिता, निर्भिकता, साहस और स्वामिभक्ति आदि गुण थे। उन्होंने हिंदू जाति को राष्ट्रप्रेम और स्वातंत्र्य प्राप्ति का संदेश दिया। इससे स्पष्ट होता है कि भूषण एक राष्ट्रीय कवि हैं। उनकी गणना हिंदी के नवरत्नों में की जाती है। उन्होंने अपने युग में केवल धन, पद, या मान ही नहीं बल्कि प्रतिष्ठा और हिंदी-साहित्य के इतिहास में अमर स्थान पाया है।

भूषण के जीवनवृत्त की तरह उनकी रचनाओं के बारे में भी पर्याप्त मतभेद हैं, क्योंकि उनकी संपूर्ण रचनाएँ आज तक प्रकाश में नहीं आयी हैं। उनकी कुछ रचनाएँ अप्राप्य हैं। उनका ` शिवराज भूषण ` यही एकमात्र उपलब्ध पूर्ण और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। ` शिवा-बावनी ` और ` छत्रसाल - दशक ` ये दो ग्रंथ संकलित हैं। इनके अतिरिक्त कुछ और स्फुट पद्य भी मिलते है। मैं ने अपने लघु-शोध प्रबंध में भूषण के उपलब्ध ग्रंथों के सहारे तथा ` शिवा-बावनी ` में चित्रित छ.शिवाजी महाराज के चरित्र को साकार करने का प्रयत्न किया है।

दूसरे अध्याय में भूषणकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन किया है। राजनीतिक परिस्थिति में सामाजिक जीवन और धार्मिक वातावरण का भी उल्लेख किया है। भूषण कालीन राजनीतिक परिस्थिति बहुत अस्थिर थी। इस अस्थिर राजनीति का प्रभाव अन्य सभी क्षेत्रों पर पडा था।

औरंगजेब ने अपने सभी सगे-संबंधियों को कपट से और छल से मारकर दिल्ली की केंद्रिय राजसत्ता अपने हाथ में ली। उसने अपनी नीति के अनुसार हिंदुओं पर बहुत अत्याचार किये। उसका सारा जीवन अनेक विद्रोहों का सामना करने में बीत गया। औरंगजेब के उत्तराधिकारी विलासी, अयोग्य और असमर्थ थे। उसकी मृत्यु के बाद अनेक छोटे-मोटे शासक स्वतंत्र बनकर भी वैमनस्य के कारण आपस में संघर्ष करते थे। ऐसे अस्थिर राजनीतिक वातावरण के कारण सामंतशाही शासन का जन्म हुआ। इस शासन में उच्चवर्ग में विलासप्रियता बहुत थी। हिंदु और मुसलमान शासकों में हमेशा युध्द होते थे। विजेता शासक विजित प्रदेशों की धन-संपत्ति लूटकर शत्रु-नारियों का भी अपहरण करते थे।

तत्कालीन लोग अशिक्षित होने के कारण उनमें अगाध अंधविश्वास था और अनेक अंधरूढियाँ थीं। अमीर-उमराव और छोटे राजा सुखी थे। मध्यम और निम्न वर्ग की स्थिति बहुत दयनीय थी। शासकों के अमानुषिक अत्याचार से सामाजिक जीवन के रचनात्मक आदर्श समाप्त हो गये थे। उसी के साथ सभ्यता और संस्कृति का -हास हो गया था। अनेक संप्रदायों और भक्ति में भी विलासिता आयी थी। हिंदु लोगों पर धार्मिक अन्याय और अत्याचार होते थे। हिंदु लोगों को मजबूर बनकर मुसलमान होना पडता था।

तीसरे अध्याय में छ.शिवाजी महाराज का चरित्र वर्णन किया है। महाकवि भूषण ने `शिवा-बावनी` इस ग्रंथ में छ.शिवाजी महाराज के चरित्र की भिन्न-भिन्न घटनाओं, उनके यश और उनकी महत्ता का ओजस्वी छंदों में वर्णन किया है। छ.शिवाजी के चरित्र को अध्ययन की सुविधा के लिए पाँच विभागों में विभाजित करके वर्णन किया है। ये पाँच विभाग इसप्रकार हैं ---

(अ) सच्चरित्रता

(आ)उदारता

(इ) वीरता

(ई) लोकसंग्राहकता

(उ) राष्ट्रीयता ।

(अ) सच्चरित्रता --

छ.शिवाजी महाराज सच्चरित्र वीर पुरुष थे। वे पर-स्त्री को माता के समान मानते थे। वे शत्रु-स्त्रियों का या अन्य किसी धर्म के धर्म-ग्रंथों या धर्मस्थानों का न स्वयं अपमान करते, और न अपने किसी सैनिक या सरदार को ही ऐसा करने देते। इस दृष्टि से वे औरंगजेब की तुलना में निस्संकोच दृष्टि से श्रेष्ठतर महामानव थे। छ.शिवाजी महाराज शत्रु प्रदेशों की लूट अपने राज्य के लिए और अपनी जनता के सुख के लिए करते थे, स्वयं के सुख के लिए नहीं।

मराठा राज्य-विस्तार के कार्य में शत्रुभूमी जो बाधाएँ थीं,उनको नष्ट करके महाराज शिवाजी ने मराठों का राज्य प्रस्थापित किया। इसतरह उन्होंने समी भारत देश की शान रखी। उनके विचारों में स्वदेश, स्वजाति और स्वधर्म प्रेम के भाव थे, इसलिए छ.शिवाजी महाराज हम सब की दृष्टि से एक आदरणीय और पूज्य देवता स्वरूप है। वे भारतीय स्वतंत्र राष्ट्र के आदर्श नवनिर्माता हैं।

(आ) उदारता --

छ.शिवाजी महाराज के राज्य में न्याय व्यवस्था अच्छी थी। उन्हें गर्व जरा भी छू नहीं गया था। वे सभी धर्मीय लोगों को समान उदारता की दृष्टि से देखते थे। वे दूसरों से कपट रहित प्यार करते थे। वे शरणागत शत्रु को अभय दान देते थे। छ. शिवाजी की नीति कर्ण के समान उदारता की थी। उन्होंने सब हिंदू राजाओं का और बडे-बडे पहाडों का भी उन पर किले बांधकर उध्दार किया। शत्रु-प्रदेश के लूट में मिले हुए धन से वे अपने राज्य का विस्तार करते थे। और शेष धन गरीबों में बाँट देते थे। इससे स्पष्ट होता है कि छ. शिवाजी उदारता में कर्ण जैसे थे।

(६) वीरता --

छ.शिवाजी महाराज महान वीर पुरुष थे। उन्होंने अपने हिंदु-राज्य की स्थापना वीरता से की। उन्होंने सभ्यता और भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है। छ.शिवाजी ने मानवता के रक्षणार्थ अपना सारा जीवन बिताया है। कवि भूषण ने छ.शिवाजी की चरित्रगत वीरता का वर्णन किया है। इसमें उन्होंने छ.शिवाजी के शौर्य और अदम्य साहस का वर्णन किया है।

छ.शिवाजी महाराज ने जो कार्य अपनी वीरता से किए उसके पीछे उनकी उदारता की भावना थी। उनकी वीरता का वर्णन युध्दवीर,धर्मवीर,दानवीर और दयावीर इन चार विभागों में किया है। छ.शिवाजी में महाभारत युग की वीरता के गुण होने के कारण वे भारत की प्राचीन संस्कृति के समर्थक और रक्षक कहे जाते हैं। भूषण ने छ.शिवाजी की वीरता का किया हुआ वर्णन पढकर या सुनकर कायर लोगों का भी हृदय उत्साह से भर जाता है। छ.शिवाजी का नाम या उनके नगाडे की आवाज सुनकर शत्रु भय से काँप उठते थे। भूषण ने छ.शिवाजी के रण-वर्णन में चण्डी और भूत-प्रेतों का भी वर्णन किया है।

छ.शिवाजी ने सब किले शत्रुओं से छीन लेकर अपनी सीमा बढाई थी और मुगल बादशाहों से बराबरी की थी।

छ.शिवाजी महाराज महादानी थे। याचक को वे माँगने से पहले और इच्छा से अधिक दान देकर संतुष्ट करते थे। उनकी प्रसन्नता से एक पल में भिक्षुक भी राजा बनता था। याचक को दान देकर छ.शिवाजी महाराज उसका आशिष लेकर मुक्ति-प्राप्ति जैसा आनंद पाते थे।

छ.शिवाजी ने अपनी तलवार के बल पर प्रबल मुगलों ,पातशाहों,बैरियों को दबा कर नष्ट कर दिया, और अपने देश, देवता और स्वधर्म को सुरक्षित रखा। भारतीयों के वेद और पुराणों की रक्षा भी छ.शिवाजी ने की। उन्होंने भारतीयों की चोटी बचाकर उनकी रोटी की भी सुरक्षा की थी। उन्होंने यवा

भाव से ही हिंदु धर्म के सोये हुए मूल्यों को प्रतिष्ठित किया । इसप्रकार छ.शिवाजी महाराज ने हिंदु जनता की लाज बचायी ।

(ई) लोक संग्राह्यता --

छ.शिवाजी महाराज की सेना में युध्द कौशल से परिपूर्ण ,स्वामिभक्त, साहसी, शूर और स्वाभिमानी वीर थे । उनके पास गुणीजन स्वच्छंदता से रहते थे । उनकी सेना के सभी लोग एकचित्त थे । वे छ.शिवाजी से इतने एकनिष्ठ थे कि, उनके कहने पर जान भी देते थे । हिंदु और मुसलमान लोग छ.शिवाजी की सेना में बराबर के पद पर थे । इसप्रकार छ.शिवाजी गुणी लोगों का ही संग्रह किया करते थे ।

(उ) राष्ट्रीयता --

छ.शिवाजी की राष्ट्रीय भावना संकुचित नहीं थी, बल्कि व्यापक थी । उनके सामने संपूर्ण भारत की भलाई थी । उनकी चेतना,उनका कर्म, उनका आदर्श एवं उनके विचार सभी राष्ट्रीय स्तर के थे । वे बडे उत्साह से जो कार्य करते थे, वे सब कार्य राष्ट्र की सुरक्षा के लिए ही करते थे । उन्होंने आदिलशाही, कुतुबशाही और औरंगजेबशाही से आजीवन संघर्ष जारी रखकर अपने राज्य का विस्तार किया था । उन्होंने हिंदु धर्म के साथ-साथ अन्य धर्मों की भी सुरक्षा की । उनमें देशभक्ति ,राष्ट्रप्रेम, योग्यता,तल्लीनता,धैर्य और निर्णय आदि सभी गुण थे ।

इसप्रकार [redacted] लघु शोध-प्रबंध के विषय के संदर्भ में मेरे मन में प्रारंभ में जो प्रश्न निर्माण हुए थे, उनके उत्तर मुझे अंत में निम्न प्रकार मिले हैं---

(१) विलासपूर्ण तथा शृंगार - प्रधान रीतिकाल में भूषण वीरकाव्य के प्रधान कवि हैं । वे ही रीतिकाल जैसे शृंगारी कालखंड में वीरकाव्य के जनक हैं ।

(२) रीतिकाल में राजनीतिक परिस्थिति अत्यंत दारुण्य थी। मुगलों के शासनकाल में हिंदुओं को संरक्षण बिलकुल नहीं था। मुगलों के अत्याचार के कारण हिंदुओं का जीवन अत्यंत दु:खपूर्ण था। हिंदुओं का जबरदस्ती धर्मांतर किया जाता था, अत: उनका धर्म भी सुरक्षित नहीं था, न उनके मंदिर और न उनके देवी-देवता।

(३) कवि भूषण के काव्य ग्रंथों में छ.शिवाजी महाराज की सच्चरित्रता के पद हैं। वे पर-स्त्री को माता के समान मानते थे। उनके सभी सैनिक, सरदार यही दृष्टिकोण रखते थे।

(४) छ.शिवाजी महाराज ने जो संपत्ति पायी उसका उपयोग उन्होंने स्वयं के सुख के लिए नहीं किया, बल्कि राज्य-विस्तार, किले बनवाना और बचे धन को गरिबों में बाँटने के लिए किया। वे कर्ण के समान उदार हृदय थे।

(५) छ.शिवाजी महाराज महान वीर पुरुष थे। वे युध्दवीर, धर्मवीर, दानवीर और दयावीर के गुणों से संपन्न थे।

(६) छ.शिवाजी महाराज ने अपनी सेना में हिंदुओं के बराबर मुसलमान वीरों को भी स्थान एवं पद दिये थे।

(७) छ.शिवाजी राष्ट्रनायक थे। संकुचित हिंदुत्व की भावना उनमें नहीं थी। सभी धर्मों, उनके धर्म-ग्रंथों का वे आदर करते थे। उनकी चेतना, उनका कर्म, उनका आदर्श, उनके विचार सभी राष्ट्रीय स्तर के थे।

इसप्रकार मैं ने भूषणकृत `शिवा-बावनी` के आधारपर छ.शिवाजी महाराज का चरित्र साकार करने का प्रयत्न किया है। हो सकता है मेरे इस प्रयत्न में त्रुटियाँ रह गयी हों। आशा है उन्हें आप उदार अंत:करण से क्षम्य समझेंगे।

संदर्भ ग्रंथसूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक । प्रकाशन । संस्करण
१	कविराज भूषण - विचरित श्री शिवा-बावनी और छत्रसाल दशक	गोवर्धनदास लक्ष्मीदास ठक्कर	श्री कल्पतरु छापखाना, मुंबई, सन १८९० ।
२	संदिप्त भूषण	डॉ.भगवानदास तिवारी	साहित्य भवन(प्रा.)लिमिटेड, इलाहाबाद ३
३	वीरकाव्य	डॉ.उदयनारायण तिवारी	भारती भंडार लीडर प्रेस इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण सं.२०१२ वि.
४	हिंदी वीरकाव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति	डॉ.राजपाल शर्मा	आदर्श साहित्य प्रकाशन दिल्ली-३ प्रथम संस्करण १९७४
५	शिवा-बावनी	टीकाकार पं.राजनारायण शर्मा भूमिका लेखक श्री देवचंद्र विशारद	प्रकाशक हिंदी भवन, जालंदर और इलाहाबाद १९६९
६	हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि	डॉ.द्वारिकाप्रसाद	विनोद पुस्तक मंदिर आगरा । षष्ठ सं.१९७९
७	भूषण(साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ.भगवानदास तिवारी	साहित्य भवन (प्रा.)लि., इलाहाबाद २ प्रथम संस्करण १४ नवंबर १९७२

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक । प्रकाशन । संस्करण।
८	शिवा-बावनी	आ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	संजय बुक सेंटर । के ३८१६, गोलघर,वाराणसी २२१००१ छटा संस्करण १९८७
९	हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास	रामबहोरी शुक्ल भगीरथ मिश्र	हिंदी भवन,जालंदर,और इलाहाबाद ।
१०	हिंदी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ	डॉ.शिवकुमार शर्मा	अशोक प्रकाशन,नई सडक, दिल्ली ६,१९७७
११	रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ.शिवलाल जोशी	साहित्य सदन,देहरादून । १९६२
१२	महाकवि भूषणकृत शिवराज भूषण (सटीक)	प्रताप नारायण टंडन	विद्यामंदिर,रानीकटारा, लखनऊ । सितंबर १९५४
१३	महाकवि भूषण रचित शिवराज भूषण	महाकवि भूषण	किताबहार,मेनरोड, गांधीनगर दिल्ली ११००३१
१४	भूषण और उनका साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	साहित्य रत्नालय, ३७।५० मिलीस बाजार, कानपुर ,द्वितीय संस्करण १९८७
१५	भूषण ग्रंथावली (सटिप्पण)	पं.श्यामबिहारी मिश्र पं.शुकदेव बिहारी मिश्र	नागरी प्रचारिणी सभा,काशी । सप्त सं., सं.२०१५ वि.

..